JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्दी शब्दों का उच्चारण शास्त्र

प्रो. अनूप सिंह
प्राचार्य, राजकीय कन्या महाविद्यालय, बहादुरपुर अलवर (राज.)

सारांश

विश्व की प्रत्येक भाषा में उच्चारण का महत्व सर्वोपरि है। सभी प्रतिष्ठित भाषाओं का अपना एक उच्चारण शास्त्र है। प्रायः देखा गया है कि ध्वनियों के उच्चारण (ध्वेवदमजपबे) पर तो पर्याप्त ध्यान दिया गया है किंतु शब्दों के उच्चारण पर इस तरह से विचार नहीं किया गया है। अंग्रेजी भाषा में ध्वनियों के साथ–साथ शब्दों के उच्चारण का अपना एक विशेष महत्व है। संस्कृत में शब्दों की व्युत्पत्ति, संरचना आदि पर तो गंभीर काम हुआ है कितु उच्चारण के क्षेत्र में ध्वनियों पर अधिक ध्यान दिया गया है। हिंदी भी इसका अपवाद नहीं है। हिंदी शब्दों के उच्चारण पर विचार करते हुए इनके उच्चारण विधान पर भी विशेष चर्चा की जानी चाहिए। ध्वनियों का उच्चारण अपने स्थान पर है लेकिन जब वही ध्वनि शब्द का हिस्सा बनती है तब उसमें कुछ परिवर्तन होता है। प्रस्तुत शाध पत्र हिंदी शब्दों के इसी उच्चारण शास्त्र को समझने का एक प्रयास है।

मुख्य शब्द (ज्ञमलूवतके)

उच्चारण शास्त्र, उच्चारण स्थान, मात्रा, स्वर, व्यंजन, सामासिक पद, अखंड उच्चारण, अक्षर, प्रभावो वर्ण, संयुक्त व्यंजन, एकलवर्णी शब्द, बहुलवर्णी शब्द, खंडित उच्चारण।

प्रस्तावना

प्रत्येक भाषा में ध्वनियों व शब्दों के उच्चारण का अपना एक शास्त्र है। हिन्दी भाषा का विकास जिस भूभाग में हुआ वहाँ क्षेत्रीय संस्कृति, भूगोल, विजातीय समागम आदि के कारण शब्दों के उच्चारण में भिन्नता पाई जाती है। सम्पूर्ण हिन्दी पट्टी में अनेक जातीय समूह आए और यहीं रहने लगे। फलस्वरूप एक मिली जुली संस्कृति विकसित हुई और भाषा भी। अनेक तत्वों के समावेश के कारण हिन्दी ध्वनियों व शब्दों में उच्चारण भिन्नता साफ दिखाई देती है। यदि हम हिन्दी शब्दों के उच्चारण विधान पर चर्चा करें तो यह भिन्नता और भी स्पष्ट हो सकती है। इस भिन्नता की पहचान करने पर शब्दों का सही उच्चारण करने का प्रयास हो सकेगा।

देवनागरी लिपि की ध्वनियों के उच्चारण में मुख्यतया दो मार्गदर्शक सिद्धान्त हैं– उच्चारण स्थान और उच्चारण में लगने वाला समय अर्थात् मात्रा। मात्रा के आधार पर ध्वनियाँ लघु और गुरु हो सकती हैं। लघु ध्वनियों के उच्चारण में कम समय लगाना पड़ता है जबकि गुरु में अधिक। मात्रा का संबंध स्वरध्वनियों से है। व्यंजन ध्वनियों का उच्चारण स्वरों के कारण ही संभव हो पाता है तथा व्यंजनों के साथ स्वर प्रायः मात्रा के रूप में ही साथ आते हैं। अतः उच्चारण में स्वरों की भूमिका ही प्रधान है।

हिन्दी शब्दों का उच्चारण विधान

हिन्दी शब्दों के उच्चारण में दो तरह से विचार किया जाता है। एक, जब शब्द अखंड रूप से उच्चरित होते हैं– प्रायः ऐसे शब्दों के लिए 'अक्षर' नाम भी भाषाविद देते आए हैं। दा, जब शब्दों का उच्चारण खंडशः किया जाता है– ऐसे शब्द मुख्यतया प्रत्ययों से निर्मित होते हैं या सामासिक पद होते हैं। अखंड उच्चारण वाले शब्दों में 'अक्षर' तो ह ही संधि, उपसग व प्रत्यय से निर्मित शब्द भी सम्मिलित किए जाते हैं। किंतु जब उपसर्ग व प्रत्यय संधि शब्द न बनाए और पृथक से मूल शब्द में जुड़ते हैं तब ऐसे शब्दों का उच्चारण प्रायः दूसरे तरीके अर्थात् खंडशः उच्चारण के रूप में किया जाता है।

1. अखंड उच्चारण

हिन्दी भाषा में 'अक्षर' का उच्चारण अखंड होता है अर्थात् ऐसे शब्द जिनकी खंड इकाइयाँ सरलता से पृथक नहीं की जा सकें तथा जिनका उच्चारण एक आघात (व्दम`जतवाम) में किया जाता है। कदाचित इसीलिए इन्हें 'अक्षर' भी कहा जाता है। 'अक्षर' के रूप में कुछ एकल वर्णी शब्द हैं लेकिन द्वि या त्रि–वर्णी शब्दों की बहुलता है। चार, पाँच या इससे अधिक वर्णों वाले शब्द जो 'अक्षर' के रूप में हैं, बहुत ही कम हैं। ऐसे शब्द प्रायः सामासिक पद, उपसर्ग व प्रत्ययों से निर्मित शब्द ही होते हैं। जिनका उच्चारण अक्षर की तरह नहीं वरन् खंडशः रूप मं होता है। यह अवश्य ध्यान देने की बात है कि ऐसे शब्दों में दो या अधिक 'अक्षर' शब्द हो सकत हैं।

अखंड उच्चारण में जो सामान्य सिद्धान्त काम करता है, वह है प्रभावी वर्ण का सिद्धान्त (पहदपपिबंदज`लससंइसम)। इस सिद्धान्त के अंतर्गत शब्दों के उच्चारण में एक या अधिक 'वर्ण' की स्थिति प्रभावी होती है जिसके उच्चारण में या तो बलाघात लगता है या थोड़ा रुकना (ींसज) पड़ता है। दूसरे शब्दों में कहें तो वर्ण विशेष की ध्वन्यात्मकता असरदार हो जाती है।

प्रभावी वर्ण का सिद्धान्त

जब शब्द का अंतिम वर्ण लघु होता है अर्थात् ह्रस्व स्वर की मात्रा य़क्त होता है तब उस अंतिम वर्ण से पूर्व का वर्ण 'प्रभावी वर्ण' होता है। उच्चारण के समय इसी 'प्रभावी वर्ण' पर या तो बलाघात की स्थिति होती है या सामान्य से थोड़ा अधिक समय लगता है या थोड़ा विराम देकर उच्चारण करना पड़ता है। इसी प्रकार संयुक्त व्यंजन से पूर्व स्थित वर्ण भी 'प्रभावी वर्ण' के अंतर्गत आता है। एक तीसरी स्थिति भी है जब किसी शब्द की पहली ध्वनि लघु और अल्पप्राण हो तथा उससे अगली ध्वनि महाप्राण हो तब यह पहली ध्वनि भी 'प्रभावी वर्ण' की श्रेणी में आती है।

- एकल वर्णी शब्द

एकल वर्णी शब्दों के उच्चारण में ध्वनियों के उच्चारण संबंधी मार्गदर्शक सिद्धान्त काम करते हैं अर्थात् उच्चारण स्थान और उच्चारण में लगने वाला समय (मात्रा)। ये शब्द मुख्यतया परस्पर वार्तालाप या संवादों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे मैं, वे, तू, हाँ, ना, कि, की, या, व, हूँ, हैं, सो, जो, खा, पी, ला, जा, तो, भी, ही, दो, नौ, छः, क्या, क्यों आदि।

- बहुल वर्णी शब्द

अक्षरों की श्रेणी में सर्वाधिक संख्या कदाचित द्विवर्णी शब्दों की है, उसके बाद तीन वर्णों वाले शब्द आते हैं जो एक आघात (व्दम ैजतवाम) में उच्चरित होते हैं। मुख्य रूप से प्रभावी वर्ण का सिद्धान्त इन्हीं शब्दों के उच्चारण में काम आता है विशेषकर उस समय यह अधिक प्रत्यक्ष हो जाता है जब अंतिम वर्ण की ध्वनि ह्रस्व होती है जैसे–

नल, पल, निधि, दन, गान, जल, पथ, नीर, नर, नक, राक, बाल, बल

नीति, रीति, जाति, बात, दूर, बाल, सार, खीर, दूध, पीर, भय, जय

कमल, कलम, परिधि, जलद, सुखद, तपन, सडक, प्रथम, दहन, दहाड़, महान

प्रलय, समीप, महेश, रमेश, अजय, अरुण, अनिल, अमित, प्रताप आदि

इसी प्रकार तीन से अधिक वर्णों वाले उन शब्दों का उच्चारण करना चाहिए जो 'अक्षर' के रूप में होते हैं अर्थात् चार वर्णों वाले शब्दों में तीसरा तथा पाँच वर्णों वाले शब्दों में चौथा वर्ण प्रभावी वर्ण होता है

फिसलन, मुसीबत, समाधान, परिचय, परिश्रम, अनायास, अवसर, परेशान, जरूरत, इतिहास, परीक्षण, पुरातन, अनवरत।

लेकिन जब अंतिम वर्ण दीर्घ (मात्रा) हो तब प्रभावी वर्ण अपनी अगली दीर्घ ध्वनि के साथ समतुल्य हो जाता है।

जैसे– नल–नला, नाभि–नाड़ी, आदि–आदी,

पृथु–पृथा, सुख–सुखी, राज–राजा, पहल–पहला,

परिधि–परिखा।

हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अंतिम वर्ण के दीर्घ होते ही 'प्रभावी वर्ण' का सिद्धान्त अपनी प्रासंगिकता खोने लगता है। ऐसी स्थिति में ध्वनियों के उच्चारण के लिए जो मार्गदशक सिद्धान्त हैं वही काम आते हैं। अर्थात् उच्चारण स्थान एवं उच्चारण में लगने वाला समय (मात्रा)।

जब किसी शब्द (विशेषकर–अक्षर) के आदि में या अन्य कोई ध्वनि लघु हो (अ, इ, उ, ऋ) तथा उससे अगली ध्वनि महाप्राण हो तब ऐसे शब्दों के उच्चारण में यह लघु (प्रथम) ध्वनि भी 'प्रभावी वर्ण' का रूपधारण कर लेती है। ऐसे शब्दों में वे शब्द भी सम्मिलित किए जा सकते हैं जिनमें 'अ' उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

अहम्, अधूरा, अभी, अठावले, अथाह, अखिल

अभय, बठिंडा (भटिंडा नहीं), सुधार, इहलौकिक, उधार

उठाना, उछाल, गृह, रुख, पहल

वह, यह, तह, लहर, टहलेना, गहरा, गहन, दहन

सहना, पथरीला।

- संयुक्त व्यंजन की उपस्थिति

जब किसी शब्द में कोई संयुक्त व्यंजन सम्मिलित हो तब संयुक्त व्यंजन से पहले वाली ध्वनि भी 'प्रभावी वर्ण' के रूप में कार्य करती है।

अवश्य, नासिक्य, वत्स, वेदव्यास, उपस्थित, परम्परा, प्रभुत्व

विन्यास, अनन्य, कर्म, ध्वस्त, समुच्चय, अप्रिय, अर्धसत्य

उल्लास, वक्तव्य, वक्त, काव्य, पूर्ण, तर्क, भविष्य।

जब संयुक्त व्यंजन से ही किसी शब्द का प्रारम्भ हो तब ऐसे शब्द के उच्चारण में विशेष सावधानी रखनी पड़ती है। क्षेत्र विशेष में इसके लिए किसी अन्य ध्वनि का भी आश्रय लिया जाता रहा है जैसे राजस्थान में 'इ', पूर्वी प्रदेशों में 'अ' का आगम होता है। वहीं हरियाणा, पंजाब व पश्चिमी उत्तरप्रदेश में संयुक्त व्यंजन को दो अलग–अलग व्यंजन ध्वनियों में परिवर्तित

कर देते हैं। यह स्थिति केवल उन संयुक्त व्यंजनों में ही पाई जाती है जिनमें एक ध्वनि 'स्' हो।

स्कूल–इ झ स्कूल (राजस्थान) स्त्री– इ झ (स्त्री) (लगभग सभी प्रदेशों में)

स्कूल– सकूल (हरियाणा, पंजाब)

स्पष्ट– इ झ स्पष्ट (राज.)– अ झ स्पष्ट (पूर्वी उत्तरप्रदेश)– सपष्ट (हरियाणा, पंजाब)

इसी प्रकार स्थान झ इ झ थान (राज.) झ सथान (हरियाणा, पंजाब

अ झ स्थान (पूर्वी प्रदेश)

किंतु स्वामी, स्वास्थ्य के उच्चारण में अन्य ध्वनि का आगम नहीं होता है।

'स' से भिन्न अन्य संयुक्त व्यंजनों के उच्चारण में कठिनाई होती है विशेषकर जब वह किसी शब्द के आदि में हो।

क्रिया झ किरया, भ्रष्ट झ भ्रष्ट

प्रथा (परथा) च्यवन (चव्यन)

संयुक्त व्यंजन का उच्चारण एक व्यंजन के रूप में होना चाहिए क्योंकि यह एक ही ध्वनि या एक ही वर्ण माना जाता है। जैसे ध्यान में 'ध्या' और 'न' दो ध्वनियाँ हैं 'ध्या' संयुक्त व्यंजन है जिसे धया नहीं बोला जा सकता है 'ध' ध्वनि का उच्चारण या के साथ होगा अलग से नहीं। इसी प्रकार ध्वनि को धवनि नहीं बोल सकते ध्व झ नि

खंडित उच्चारण (द्विभाजन पद्धति)

हिन्दी शब्दों के उच्चारण की दूसरी विधि है– खंडित उच्चारण। अर्थात् शब्द में निहित दो पृथक इकाइयों की पहचान करते हुए उनका उच्चारण करना। पृथक इकाइयों के उच्चारण में अखंड उच्चारण का सिद्धान्त काम करेगा। हिन्दी शब्दों में मुख्यतया दो ही इकाइयाँ प्रत्यक्ष होती हैं। दो से अधिक इकाइयां हो सकती है लेकिन हिन्दी ही क्या विश्व की अन्य महत्वपूर्ण भाषाओं में भी तीन–तीन इकाइयां का एक शब्द के रूप में उच्चारण आम नहीं है। उच्चारण करते समय हम उसे दो इकाइयों तक सीमित कर देते हैं। खंडित उच्चारण वाले शब्दों में मुख्यतया सामासिक पद और प्रत्यय से निर्मित शब्द आते हैं। संधि के अंतर्गत आने वाले उपसर्गों व प्रत्ययों को छोड़कर अन्य उपसर्गों व प्रत्ययों से बने शब्द खंडित उच्चारण के अंतर्गत लिए जाने चाहिए। जैसे– असफल को अस झ फल नहीं वरन् अ झ सफल की तरह उच्चरित किया जाना चाहिए। अन्य उदाहरण देखिए–

पृथक उपसर्गों से निर्मित शब्द

असमय– अ झ समय (अस झ मय ग) असमान– अ झ समान (अस झ मान ग)

आहरण– आ झ हरण (आह झ रण ग) अनुभव– अनु झ भव

प्रतिदिन– प्रति झ दिन विमुख– वि झ मुख

अविज्ञ– अ झ विज्ञ अभिज्ञ– अभि झ ज्ञ (अ झ भिज्ञ)

अपकार– अप झ कार उपकार– उप झ कार

उपसंहार– उप झ संहार उपस्थित– उप झ स्थित

परजीवी– पर झ जीवी परदेशी– पर झ देशी

नियम– नि झ यम निबंध– नि झ बंध

पृथक प्रत्ययों से निर्मित शब्द

जड़त्व– जड़ झ त्व लघुता– लघु झ ता

जनता– जन झ ता पेशगी– पेश झ गी

दागदार– दाग झ दार भारतीयता– भारतीय झ ता

बाजीगर– बाजी झ गर कामगार– काम झ गार

शानदार– शान झ दार जरूरतमंद – जरूरत झ मंद

प्रायः देखा गया है कि 'जनता' का उच्चारण 'जन्ता' की भाँति होता है। ऐसा इसलिए कि 'जनता' में दो इकाइयाँ हैं – 'जन' तथा 'ता' प्रत्यय। 'जन' के उच्चारण में 'ज' प्रभावी वर्ण है न कि 'न'। अतः 'न' की ध्वनि क्षीण रहती है। इसीलिए उच्चारण में हमें 'जन्ता' का आभास होता है।

अन्य प्रत्यय जो मूल शब्द में 'संधि' की तरह मिल जाते है उनका उच्चारण 'अखंड उच्चारण' के अंतर्गत किया जाता है। अर्थात् ऐसे शब्दों में प्रत्यय को आसानी से पृथक नहीं किया जा सकता है। जैस–

थकान चकित रंगीन– (रंग–ईन) पाठक– (पाठ–क)

बपौती धूमिल गांगय– (गंगा–एय)

चुनौती चमकीला सौमित्र (सुमित्रा–अ)

सामासिक पद (समस्त पद)

समस्त पद वे शब्द होते हैं जिनमें दो शब्द या शब्द रूप सम्मिलित होते हैं। इन शब्दों के उच्चारण में प्रायः दोनों पदों के लिए उच्चारण पर ध्यान दिया जाता है। प्रत्येक पद के उच्चारण में अखंड उच्चारण के सिद्धान्त लागू होते हैं।

धरतीपुत्र– धरती झ पुत्र

हमराज– हम झ राज

लब्ध प्रतिष्ठ– लब्ध झ प्रतिष्ठ

सेनापति– सेना झ पति

सौरमंडल– सौर झ मंडल

फलदायी– फल झ दायी

आजीवन– आ झ जीवन

शोकसंतप्त– शोक झ संतप्त

मुख्यधारा– मुख्य झ धारा

कमलनयन– कमल झ नयन

महाविद्यालय– महा झ विद्यालय

वनवास– वन झ वास

शापग्रस्त– शाप झ ग्रस्त

नीलकमल– नील झ कमल

चंद्रयान– चंद्र झ यान

हस्तकौशल– हस्त झ कौशल

हवाबाज– हवा झ बाज

देशभक्ति– देश झ भक्ति

गंगाजल– गंगा झ जल

विद्यापीठ– विद्या झ पीठ

भयमुक्त– भय झ मुक्त

माता–पिता– माता झ पिता

प्रसन्नचित्त– प्रसन्न झ चित्त

प्रधानमंत्री– प्रधान झ मंत्री

त्रिकाल– त्रि झ काल

लेकिन समस्तपद में संधि का समावेश हो तब ऐसे शब्दों का अखंड उच्चारण वाले नियमों से उच्चरित करना चाहिए।

दशानन	क्रोधाग्नि	पतनोन्मुख
लम्बोदर	जलाशय	विश्वामित्र (मूल पद है– विश्वमित्र)
महाशय	मूलोच्छद	विजयादशमी (मूल पद है– विजयदशमी)
सप्तर्षि	शरणागत	चराचर (चर–अचर)
पीताम्बर	देशोत्थान	उत्तरोत्तर (उत्तर–उत्तर)

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिन्दी शब्दों के उच्चारण में 'प्रभावी वर्ण' की पहचान होने पर उसका उच्चारण ठीक ढ़ंग से किया जा सकता है। सामान्यतया प्रभावी वर्ण अंतिम वर्ण

से पहले वाला वर्ण होता है तथा उसके उच्चारण में अनायास ही हलके बलाघात या थोड़े विराम की आवश्यकता होती है। दीर्घ मात्रा के साथ प्रभावी वर्ण संतुलित हो जाता है। दीर्घ मात्रा अपने आप में एक प्रभावी वर्ण की भूमिका निभाती है। इसी प्रकार संयुक्त व्यंजन से पूर्व का वर्ण भी प्रभावी वर्ण होता है। अतः कहा जा सकता है कि उक्त तीनों स्थितियाँ एक ही वर्ण में उपस्थित हो सकती है तथा एक शब्द में अलग–अलग वर्णों पर भो।

न झ नग झ नगर झ नागरिक झ नागरिकता (नागरिक झ ता)

म हत्व ('म' व 'ह' प्रभावी वर्ण की भूमिका में है। 'म' इसलिए कि इस लघु व अल्पप्राण ध्वनि के बाद महाप्राण ध्वनि 'ह' है। 'ह' पर इसलिए कि यह संयुक्त व्यंजन से पूर्व की ध्वनि है और तीन वर्णों वाले शब्दों में यह दूसरी ध्वनि (प्रभावी वर्ण का सिद्धान्त) भी है।

संदर्भ/सहायक ग्रंथ

1. मानक हिंदी व्याकरण और रचना– छब्म्त्ज
2. उच्चारण शिक्षण – ब्मदजतंस च्मकंहवहपबंस प्देजपजनजमए ।ससींइंक
3. हिंदी व्याकरण – नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
4. हिंदी व्याकर– कामता प्रसाद गुरु, लोकभारती प्रकाशन
5. ईज्ञानकोष – इकाई– प्रथम हिंदी के भाषिक तत्व ेण्महलंदावींण्संण्पद
6. भाषा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, पटना
7. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. राजमणि शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. भाषा और भाषा विज्ञान– डॉ. तेजपाल चौधरी, विकास प्रकाशन, कानपुर
9. अभिनव भाषा विज्ञान – डॉ. उदय नारायण तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद